موضوع الخطبة : الإيمان باليوم الآخر– جزء 7

الخطيب : فضيلة الشيخ ماجد بن سليمان الرسي حفظه الله

لغة الترجمة : الهندية

المترجم : فيض الرحمن التيمي

शीर्षक:

आखिरत के दिन पर ईमान लाने के तक़ाज़े—क़िस्त 7

(क़्यामत के दिन की जाने वाली शिफाअ़त के प्रकार)

प्रथम उपदेश:

إنَّ الْحَمْدَ لِلَّهِ، نَحْمَدُهُ وَنَسْتَعِينُهُ وَنَسْتَغْفِرُهُ، وَنَعُوذُ بِاللَّهِ مِنْ شُرُورِ أَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ أَعْمَالِنَا، مَنْ يَهْدِهِ اللَّهُ فَلَا مُضِلَّ لَهُ، وَمَنْ يُضْلِلْ فَلَا هَادِيَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنْ لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ، وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ. (يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُواْ اتَّقُواْ اللّهَ حَقَّ تُقَاتِهِ وَلاَ تَمُوتُنَّ إِلاَّ وَأَنتُم مُّسْلِمُون). (يَا أَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُواْ رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن نَّفْسٍ وَاحِدَةٍ وَخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالاً كَثِيراً وَنِسَاء وَاتَّقُواْ اللّهَ الَّذِي تَسَاءلُونَ بِهِ وَالأَرْحَامَ إِنَّ اللّهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيبا).(يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اتَّقُوا اللَّهَ وَقُولُوا قَوْلاً سَدِيداً * يُصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَمَن يُطِعْ اللَّهَ وَرَسُولَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزاً عَظِيما).

प्रसंशा के पशचातः

सर्वश्रेष्ठ बात अल्लाह की बात है,और सर्वोत्तम मार्ग मोहम्मद सल्ललाहु अलैहि वसल्लम का मार्ग है,दुष्टतम चीज़ धर्म में अविष्कार की गई

बिदअ़त(नवाचार)हैं,प्रत्येक अविष्कार की गई चीज़ बिदअ़त है,प्रत्येक बिदअ़त गुमराही है और प्रत्येक गुमराही नरक में ले जाने वाली है।

ए मुसलमानो!अल्लाह तआ़ला से डरो और उसका भय अपने मन और हृदय में जीवित रखो,उसका आज्ञा मानो और उसके अवज्ञा से बचते रहो,जानलो कि अल्लाह तआ़ला अपने धर्म के निर्माण में,अपनी दक़दीर(भाग्य)में और बदला एवं दंड में महान नीति वाला है और अल्लाह तआ़ला की एक निति यह भी है कि उसने इस मख़्लूक़(जीव)के लिए एक अवधि निश्चित किया है जिस में उन्हें उन आ़माल(कार्यों)का बदला देगा जिनका उसने अपने संदेशवाहक द्धारा उन्हें मोकल्लफ(उत्तरदायी)बनाया है,अल्लाह का कथन है:

﴿أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًاوَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لا تُرْجَعُون * فتعالى الله الملك الحق﴾.

अर्थातः क्या तुम ने समझ रखा है कि हम ने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर फिर नहीं लाये जाओगे?तो सर्वोच्च है अल्लाह वास्तविक अधिपति।

ए मोमिनो!पिच्छले दो उपदेशों में आखिरत के दिन पर ईमान लोन के तक़ाज़े के संबंध में चर्चा की गई,जो कि ये हैं:सूर में फूंक मारना,क़्यामत की विशाल चिन्हें,मख्लकों का पुनःउठाया जाना,लोगों को मह़शर के मैदान में जमा करना,जज़ा व सज़ा एवं हिसाब व किताब एवं स्वर्ग की नेमत,नरक की गुणवत्ताए,क़्यामत के कुछ दृश्यें,आज हम ईन्शा अल्लाह क़्यामत के दिन की जाने वाली शिफाअ़त के विभिन्न प्रकारों पर चर्चा करेंगे।

- अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन जो दृश्य घटित होंगे उन में यह भी होगा कि सिफरिश करने वाले सिफारिश के पात्रों के लिए सिफारिश करेंगे,सिफारिश करने वालों के छ प्रकार हैं:रसूल,मोमिन,शहीद,किशोर बालक,देवदूत एवं क़ुरान।

1.रसूलों का अपने मोमिन अनुयायियों के लिए सिफारिश करनाःइसका संबंध उन अनुयायियों से होगा जो अपने पापों के कारण नरक में प्रवेश होंगे,अतःरसूल सिफारिश करेंगे कि उन्हें नरक से निकाला जाए,इसका प्रमाण जाबिर रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है,फरमाते हैं कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने फरमायाः"जब स्वर्गवासी एवं नरकवासी के बीच अंतर हो जाएगा,और स्वर्गवासी स्वर्ग में और नरकवासी नरक में प्रवेश कर जाएंगे तो रसूल सिफारिश के लिए खड़े होंगे,(अल्लाह तआ़ला)फरमाएगाःजाओ और जिन्हें तुम पहचानते हो उन्हें(नरक से)निकाल लो,अतः वह अपने(अनुयायियों को)निकालेंगे जबकि वे जल भुन कर काले हो चुके होंगे,फिर उन्हें एक नहर में डाल देंगे जिसे(नहरे हयात)कहा जाता है,उनके झ़ुलसे हुए शरीर के अंग नहर के किनार गिर जाएंगे,और वे ककड़ियों के जैसे(तेजी के साथ)पुनःसफेद हो कर उग जाएंगे,फिर वह रसूल (दूसरी बार) सिफारिश करेंगे तो(अल्लाह)फरमाएगाःजाओ,जिस के दिल **हृदय** में क़ीरातव[1]के समान भी ईमान हो उसे निकाल लाओ,अतःवह कुछ लोगों को निकाल लाएंगे,फिर सिफारिश करेंगे,(अल्लाह तआ़ला)फरमाएगाःजाओ,जिस के **हृदय** में राई के दाने के बराबर भी ईमान हो उसे निकाल लाओ......अलह़दीस।[2]

रसूल उन मोमिनों के लिए सिफारिश करेंगे जो नरक में जा चुके होंगे,इस का प्रमाण हो़ज़ैफा रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस भी है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःइब्राहिम(अलैहिस्सलाम)क़्यामत के दिन कहेंगेःए मेरे परवरदिगार!तो अल्लाह तआ़ला फरमाएगाःलब्बेक ए इब्राहिम!इब्राहिम(अलैहिस्सलाम)कहेंगेः(मेरी संतान को तू ने नरक में डाल दिया),अल्लाह तआ़ला फरमाएगाःजिस के **हृदय** में एक अंश अथवा एक दाना के समान भी ईमान हो,उसे नरक से निकाल लो।[3]

2.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त(अनुशंसा)का दूसरा प्रकार यह होगा कि जो मोमिनीन स्वर्ग में होंगे वे अपने उन भाइयों के लिए नरक से निकलने की सिफारिश करें गे जो नरक में होंगे,इस का प्रमाण सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

---

[1] जन का एक माप है,जो आज कल गेहूं के दो दाने के समान होता है।देखेंः"अलमोजम अलवसीत"।

[2] इसे बोखारी(6558)और अह़मद(3/325)ने रिवायत किया है और उपरोक्त शब्द अह़मद के हैं।

[3] इसे इब्ने हि़ब्बान(7378)ने रिवायत किया है,और शोऐब अलअरनाऊत ने अपने शोध में कहा किःइसकी सनद सही़हैन(बोखारी एवं मुस्लिम)की शर्त पर सही़ है।

वसल्लम ने फरमायाः.....यहां तक कि जब नरक से मक्ति पालेंगे,शपथ अल्लाह की जिस के हाथ में मेरा प्राण है!तुम में से कोई पूरा पूरा अधिकार प्राप्त करने(के विषय)में इस प्रकार अल्लाह से विनती एवं प्रार्थना नही करता जिस प्रकार से क़्यामत के दिन मोमिन अपने मुसलमान भाइयों के प्रति करेंगे जो अग्नि में होंगे,वे कहेंगे किः ए हमारे रब!हमारे ये भाई भी हमारे साथ नमाज़ पढ़ते थे और हमारे साथ रोज़े रखते थे और हमारे साथ अन्य(नेक)कार्यों को करते थे(उनको भी नरक से मुक्ति प्रदान फरमा)अतःअल्लाह फरमाएगा किः(जाओ और जिसे तुम पहचान पाओ उसे नरक से निकाल लो)और अल्लाह उनके मुखों को नरक पर ह़राम(वर्जित)कर देगा। अतःवे बहुत से ऐसे लोगों को निकालेगे जिनकी आधी पिंडलियों तक अथवा घुटनों तक आग पकड़ चुकी होगी।फिर वापस आएंगे और कहेंगेः (ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा) ।अल्लाह तआ़ला उनसे फरमाएगा कि जाओ और जिस के **हृदय** में अशरफी के समान भी ईमान हो उसे भी निकाल लाओ ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेंगे ।फिर वे वापस आएंगे और कहेंगेः(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हमने रनक में नहीं छोड़ा) ।अल्लाह तआ़ला फिर फरमाएगा कि जाओ और जिस के **हृदय** में आधी अशरफी के समान ईमान हो उसे भी निकाल लाओ ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेगे,फिर लौट कर आएंगे और कहेंगेःः(ए हमारे परवरदिगार!जिन्हें तू ने निकालने का आदेश दिया था,उनमें से किसी को हम ने नरक में नहीं छोड़ा) ।फिर अल्लाह फरमाएगाःजाओ और जिसके **हृदय** राई के दाने के समान भी ईमान हो,उसे निकाल लो ।अतःवे अनेक लोगों को निकालेंगे,फिर कहेंगेः(ए हमारे रब!हम ने नरक में किसी पुण्य करने वाले को नहीं छोड़ा) ।अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अंहु कहा करते थे

कि:यदि तुम पुष्टि नहीं करते तो यह आयत पढ़ो «إن الله لا يظلم مثقال ذرة وإن تك

حسنة يضاعفها»"अल्लाह तआ़ला।[4]

3.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश का तीसरा प्रकार यह होगा कि देवदूत पापी मोमिनों के हित में नरक से निकलने की सिफारिश करेंगे,फिर अल्लाह तआ़ला बिना किसी सिफारिश के केवल अपने कृपा एवं दया से अनेक समूहों को नरक से निकालेंगा,उपरोक्त सिफारिशों के पश्चात अल्लाह तआ़ला फरमाएगा:"देवदूतों ने सिफारिश की,पैगंबरों ने सिफारिश की,मोंमिनों ने सिफारिश की,अब ارحم الراحمین (सर्वाधिक दया करने वाले) के अतिरिक्त कोई शेष नहीं रहा(एक शब्द में है कि:केवल मेरी सिफारिश रह गई),तो वह आग से एक **मुट्ठी** भरेगा और ऐसे लोगों को उस में से निकाल ले गा जिन्हों ने कभी भलाई का कोई कार्य नहीं किया था,और वे(जल कर)कोयला हो चुके होंगे,फिर वह उन्हें स्वर्ग के दहानों पर(बहने वाली)एक नहर में डाल देगा,जिस को नहरे हयात कहा जाता है,वे इस प्रकार से (उग कर) निकलेंगे जिस प्रकार से(घास का)छोटा बीज सैलाब के कूड़े कर्कट में फूटतो है"।[5]

जाबिर रज़ीअल्लाहु अंहुमा की ह़दीस में आया है कि:अल्लाह तआ़ला फरमाएगा:.....अब में अपने ज्ञान एवं कृपा के आधार पर(नरक से मख़्लूक़ को)निकालूंगा,फरमाया कि:अत:उन मोमिनों ने जितने लोगों को निकाला था उनके कई गुना संख्या को अल्लाह तआ़ला निकाले गा और फिर उस संख्या के कई गुना लोगों को निकाले गा,और उनकी गर्दन पर लिखा देगा:(अल्लाह

---

[4] इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है।

[5] इसे बोखारी(7439)और मुस्लिम(183)ने वर्णित किया है और उपरोक्त शब्द मुस्लिम के है,ह़दीस के वर्णन कर्ता:अबू सईद खुदरी रज़ीअल्लाहु अन्हु,जो शब्द कोष्ठक में लिखे गए हैं वे बोखारी के हैं।

तआ़ला के स्वतंत्र बंदे),फिर वे स्वर्ग में प्रवेश करेंगे और वहां उनका नाम"جہنمیون" होगा।[6]

4.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली शिफाअ़त का चौथा प्रकार यह होगा कि शहीद अपने मोमिन भाइयों के लिए सिफारिश करेंगे,इसका प्रमाण मिक़दाम बिन मादीकरब रज़ीअल्लाहु अंहु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाः"अल्लाह के पास शहीदों के लिए छ पुरस्कार हैं,(1)रक्त का प्रथम बोन्द गिरने के साथ ही उसकी क्षमा मिल जाता है,(2)वह स्वर्ग में अपना स्थान देख लेता है,(3)क़ब्र की यातना से सुरक्षित रहता है,(4) «فزع الأكبر» (बड़े घबराहट वाले दिन)से सुरक्षित रहेगा,(5)उसके सर पर सम्मान का मुकुट रखा जएगा जिस का एक याकू़त दुनिया एवं उसकी सारी चीजों से अच्छा है,(6)बहत्तर(72)स्वर्ग की हूरों से उसका विवाह किया जाएगा,और उसके सत्तर परिजनों के हित में उसकी शिफाअ़त स्वीकार की जाएगी"।[7]

5.अल्लाह के बंदा!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश में पांचवे प्रकार की सिफारिश वह होगी जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पाने वाले बालक अपने माता. पिता के हित में करेंगे,(इसके लिए ह़दीस में)فرط का शब्द आया है जिस का अर्थ होता हैःवह बालक जो यौवनारंभ से पूर्व मृत्यु पालें,इसका प्रमाण अबू होरैरा रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमायाःजिस मुसलमान माता पिता की भी तीन अप्रौढ़ बच्चे की मृत्यु हो जाएं तो अल्लाह तआ़ला उनको अपने कृपा से क्षमा प्रदान करदेता। रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फरमाते हैंः"उनसे कहा जाएगाःस्वर्ग में प्रवेश करजाओ,तो वे कहेंगे(हम प्रवेश नहीं कर सकते)जब तक कि हमारे माता

---

[6] इसे अह़मद(3/325)ने वर्णित किया है औरने वर्णित किया है और"अलमुस्नद"के शोधकर्ताओं ने इसे सह़ी मान कर कहाःइसकी सनद मुस्लिम की शर्त पर सह़ी है।
[7] इसे तिरमिज़ी(1663),इब्ने माजा(2799),अह़मद(4/131)ने रिवायत किया है और अल्बानी ने"अलजनाएज़"(पृष्ठ 50,वर्षः1412हिजरी)में इसे सह़ी कहा है।

पिता प्रवेश न करें,(फिर)कहा जाएगाः(जाओ)अपने माता पिता के साथ स्वर्ग में प्रवेश कर जा"।

6.अल्लाह के बंदो!क़्यामत के दिन होने वाली सिफारिश का **छठा** प्रकार यह है कि क़ुरान मोमिनों के हित में सिफारिश करेगा,इसका प्रमाण अबू ओमामा बाहेली रज़ीअल्लाहु अन्हु की ह़दीस है कि मैं ने आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुनाः"क़ुरान पढ़ा करो क्योंकि वह क़्यामत के दिन क़ुरान वालों(ह़िफज़ व क़िराअत(सस्वरपाठ)एवं अ़मल करेन वालों)का सिफारशी (सिफारिशकर्ता) बन कर आएगा।दो रोशन चमकती हुई सूरतेंःअलबक़्रा एवं आलेइमरान पढ़ा करो क्योंकि वे क़्यामत के दिन इस प्रकार से आएंगी जैसे वे बादल अथवा छाया हों अथवा जैसे वह एक सीध में उड़ते पछियों के दो डाड़े हों,वे अपनी संगत में रहने वालो(अर्थात उसे पढ़ने और उस पर अ़मल करने वालों)की ओर से रक्षा करेंगी"।[8]

- अल्लाह के बंदो!यह क़्यामत के दिन होने वाली छ प्रकार की सिफारिशें हैं,जिन से नरक में जाने वाले मोमिनों को लाभ मिले गा और(उन सिफारिशों के माध्यम से)उन मोमिनों को स्वर्ग में जाने की अनुमति मीलेगी जो नरक में प्रवेश नहीं किए होंगे।
- अल्लाह तआ़ला मुझे और आपको क़ुरान की बरकतों से मालामाल फरमाए,अल्लाह मुझे और आपको क़ुरान की आयतों एवं नीतियों पर आधारित परामर्शों से लाभान्वित फरमाए,में अपनी यह बात कहते हुए अल्लाह से अपने लिए और आप सब के लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूं,अतःआप भी उससे क्षमा प्राप्त कीजिए,निसंदेह वह अति क्षमा प्रदान करने वाला एवं अति कृपालु है।

द्धितीय उपदेशः

الحمد لله وحده، والصلاة والسلام على من لا نبي بعده.

प्रशंसाओं के पश्चात!

---

[8]इसे मुस्लिम(804)और अह़मद(2/510)ने वर्णन किया है और अल्बानी ने"सहीहुल जामे"(5780)में सही कहा है।

अल्लाह के बंदो!आप अल्लाह का तक़्वा अपनाएं और जान लें कि उपरोक्त सिफारिश हर किसी को प्राप्त नहीं होंगी,बल्कि जिस के अंदर सिफारिश की शर्तें पाई जाएं गी उसी के हित में अल्लाह सिफारिश को स्वीकार करेगा,अन्यथा सिफारिश **रद्‌द** कर दी जाएगी,इस सिफारिश को الشفاعة) (المثبتة कहा जाता है,अर्थात जिसका होना सिद्ध है,शिफाअ़त की दो शर्तें हैं:अल्लाह तआ़ला का सिफारशी(सिफारिशकर्ता)को सिफारिश की अनुमति देना,इसका प्रमाण अल्लाह तआ़ला का यह फरमान है:

من ذا الذي يشفع عنده إلا **بإذنه**

अर्थात:कोन है जो उसकी अनुमति के बिना उसके सामने सिफारिश करे। तथा यह कि:

﴿ولا تنفع الشفاعة عنده إلا لمن **أذن له**﴾

अर्थात:सिफारिश भी उसके पास लाभ नहीं देती सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।[9]

दूसरी शर्त:जिसके हित में सिफारिश की जाए,अल्लाह का उससे प्रसन्न होना,इस शर्त का प्रमाण अल्लाह का यह कथन है: ﴿ولا يشفعون إلا لمن **ارتضى**﴾

अर्थात:वह किसी की भी सिफारिश नहीं करते सिवाए उनके जिनसे अल्लाह प्रसन्न हो।

तथा यह कि:

﴿يومئذ لا تنفع الشفاعة إلا من أذن له الرحمٰن **ورضي** له قولا﴾

अर्थात:उस दिन सिफारिश कुछ काम नहीं आएगी मगर जिसे रह़मान आदेश दे और उसकी बात को पसंद फरमाए।

---

[9] क़ुरान के एकीस(21)स्थानों पे अल्लाह तआ़ला की अनुमति के बिना सिफारिश करने का खण्डन किया गया है।देखें:"المعجم المفهرس لألفاظ القرآن الكريم" مادة: شفع

अल्लाह तआ़ला ने इन दोनों शर्तों को अपने इस फरमान में एक साथ बयान किया है:

﴿وكم من ملك في السماوات لا تغني شفاعتهم شيئا إلا من بعد أن **يأذن** الله لمن يشاء **ويرضى**﴾

अर्थातःऔर बहुत से देवदूत आकाशों में हैं जिन की सिफारिश कुछ भी लाभ नहीं दे सकती मगर यह और बात है कि अल्लाह तआ़ला अपनी प्रसन्नता और अपनी चाहत से जिस के लिए चाहे अनुमति देदे।

सिफारिश उसी के हित में(स्वीकार)की जाएगी जिस से अल्लाह प्रसन्न हो,इसका प्रमाण यह भी है कि इब्राहिम अलैहिस्सलाम अपने पिता आज़र के लिए सिफारिश करेंगे किंतु अल्लाह तआ़ला उनकी सिफारिश को स्वीकार नहीं करेगा,क्योंकि उनके पिता मुशरिक हैं,जबकि सिफारशी(सिफारिशकर्ता) इब्राहिम अलैहिस्सलाम होंग जो कि खलीलुल्लाह हैं।

- ए मोमिनो!यह जानना जरूरी है कि अल्लाह तआ़ला बंदा से उसी समय प्रसन्न होगा जब वह तौह़ीद(एकेश्वरवाद)का पालन करेगा,जिस का अर्थ है:समस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह पाक के लिए ही करना,चाहे वह नमाज़ हो,दुआ़ हो,बली हो और नजर इत्यादि हो।जैसा कि अबूहोरैरा रज़ीअल्लाहु अंहु से वर्णित ह़दीस में आया है कि:.....मैं ने अपनी दुआ़ क़्यामत के दिन अपनी उम्मत के सिफारिश के लिए सुरक्षित कर ली है,अतःयह दुआ़ इन्शा अल्लाह!मेरी उम्मत के प्रत्येक मानव को पहुंचेगी जो अल्लाह के साथ किसी को साझो न करते हुए मृत्यु पाया"।इसे तिरमिज़ी।[10]

यह और इस जैसी अन्य ह़दीसें इस बात पर साक्ष्य हैं कि दुआ़ इत्यादि जैसी समस्त प्रार्थानाओं को केवल अल्लाह मात्र के लिये ही करना उस व्यक्ति के लिए प्रथम शर्त है जो क़्यामत के दिन सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित होना चाहता है,किंतु वह व्यक्ति जो शिर्क में लतपत रहा,जैसे मख्लूक से दुआ़ करे,अथवा उनके नाम पर बलि चढ़ाए और नजर माने.... इत्यादि तो ऐसे व्यक्ति को किसी की सिफारिश प्राप्त नहीं होगी,चाहे जो भी

---

[10] इसे तिरमिज़ी(3602)ने रिवायत किया है और कहा है कि:यह ह़दीस ह़सन सह़ी है।

करले,और यदि कोई व्यक्ति उसके हित में सिफारिश करेगा भी तो उसकी सिफारिश स्वीकार नहीं होगी,चाहे सिफारशी(सिफारिशकर्ता)आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ही क्यों न हो,क्योंकि शिर्क,सिफारिश(की स्वीकृती)में बाधा है।

- हे अल्लाह!हमें आखिरत में सिफारिश करने वालों की सिफारिश से लाभान्वित फरमा।
- हे अल्लहा!हम तुझ से स्वर्ग चाहते हैं और वे कार्य एवं अ़मल भी जो स्वर्ग से निकट करदे,और हम तेरा शरण चाहते हैं नरक से और उस कार्य एवं कथन से भी जो नरक से निकट रकदे।
- हे अल्लाह!हमें अपना प्रेम एवं उस अ़मल से प्रेम प्रदान कर जो तुझ से निकट करदे।
- हे अल्लाह!हमने अपना बड़ा हानि किय और यदि तू क्षमा न करेगा और हम पर कृपा न करेगा तो निसंदेह हम हानी उठाने वालों में से हो जाएंगे।तू हमें अपने पास से क्षमा प्रदान कर और हम पर कृपा कर,निसंदेह तू अति क्षमा करने वाला बड़ा कृपालु है।
- हे अल्लाह!हमारे समस्त पापों को क्षमा करदे,छोटे हों अथवा बड़े,पूर्व के हों अथवा पश्चात के,आंतरिक हों अथवा **बाह्य** ।
- हे हमारे रब!हमें दुनिया में पुण्य दे और आखिरत में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक की यातना से मुक्ति प्रदान कर।
- اللهم صل على نبينا محمد وآله وصحبه وسلِّم تسليما كثيرا.

लेखक:

माजिद बिन सुलेमान अर्रसी

२९ मोहर्रम १४४३ हिजरी

अनुवादक:

फैज़ुर रह़मान ह़िफजुर रह़मान तैमी

binhifzurrahman@gmail.com